ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBBIL04292
RNI REG. NO. UPBBIL/2014/66218 PP. NO.- 351-356

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-11, No.-II, Issues-14 YEAR- Dec. -2019

देवरिया जनपद में शस्य गहनता पर अवस्थापनात्मक तत्वों का प्रभाव

अरविन्द कुमार
एसोसिएट प्रोफेसर, भूगोल विभाग, संत विनोबा पीद्गजीद्ग कालेज, देवरिया (उ0प्र0) भारत

Received- 24.11.2019, Revised- 28.11.2019, Accepted - 03.12.2019 E-mail: - drbrajeshkumarpandey@gmail.com

सारांश : *ग्रामीण भारत की अर्थव्यवस्था का मूल आधार कृशि है, अतः ग्रामीण विकास भी कृशि विकास पर ही अवलम्बित है इस लिए कृशि का सम्यक विकास अनिवार्य है। उल्लेखनीय है कि नवीनतम आर्थिक सर्वेक्षण के अनुसार राश्ट्रीय सकल उत्पादन में कृशि का योगदान लगभग 18 प्रतिषत तक हो गया है अभी भी ग्रामीण क्षेत्र में कार्यरत कुल जनसंख्या का लगभग 66 प्रतिषत कृशि में संलग्न है। कृशि विकास के अध्ययन हेतु विभिन्न विद्वानों ने विभिन्न सूचकांकों का प्रयोग किया है, जिसमें कृशि उत्पादकता, षस्य गहनता, कृशि में निवेष, कृशकों का रहन–सहन स्तर जैसे सूचकांक महत्वपूर्ण है।*

प्रस्तुत षोध पत्र में कृशि विकास को समझाने हेतु क्षेत्र में षस्य गहनता को मुख्य सूचकांक माना गया है। षस्य गहनता में क्षेत्रीय असमानता के कारकों को समझने के लिए कृशि अवस्थापनात्मक कारक में क्षेत्रीय विभिन्नता का अध्ययन किया गया है।

कुंजीभूत शब्द– वैष्णव भक्ति, सगुणात्मक, विग्रह, कल्पना, नीलोत्पल वर्ण, चतुर्भुजधारी, पुण्डरीकाक्ष, अंधकार।

अध्ययन क्षेत्र का भौगोलिक परिचय– देवरिया जनपद का भौगोलिक विस्तार 260–6′ से 270–8′ उत्तरी अक्षांष तथा 830–29′ से 480–26′ पूर्वी देषान्तर के मध्य है। इस के उत्तर में कुषीनगर पष्चिम में गोरखपुर, दक्षिण–पष्चिम में मऊ, दक्षिण में बलिया जनपद तथा पूर्व में बिहार राज्य स्थित है। लखनऊ से देवरिया की दूरी 332 किमी० है। बिहार राज्य के सिवान जिले से भी इस जनपद की दूरी 50 किमी० है। दक्षिण पष्चिम में इस जनपद की सीमा पर राप्ती नदी, दक्षिण में घाघरा नदी तथा उत्तर में छोटी गंड़क नदी प्रवाहित होती है। इस के अतिरिक्त अन्य अनेक छोटी–छोटी नदियाँ प्रवाहित होती है। इस जनपद का कुल भौगोलिक क्षेत्रफल 2538 वर्ग किमी० है जो गोरखपुर मण्डल का 21.31 प्रतिषत है। 2011 की जनगणना के अनुसार देवरिया जनपद की नगरीय जनसंख्या 317000 तथा ग्रामीण जनसंख्या 2784000 है। जनपद का जनघनत्व 1222 व्यक्ति प्रति वर्ग किमी० है। 2011 की जनगणना के अनुसार प्रति 1000 पुरूशों पर स्त्रियों का अनुपात 1013 है जब कि मण्डल में यह अनुपात 980 तथा राज्य का अनुपात 912 है। इस प्रकार जनपद में स्त्रियों का अनुपात मण्डल एवं राज्य से अधिक है। 2011 की जनगणना के अनुसार जनपद में पुरूशों की संख्या 1537436 तथा स्त्रियों की संख्या 1563510 है। 2011 की जनगणना के अनुसार यहाँ की साक्षरता दर 91.13 प्रतिषत है जब कि प्रदेष की साक्षरता दर 67.7 प्रतिषत है। इस प्रकार जनपद की साक्षरता पद प्रदेष से काफी अधिक है।

देवरिया जनपद कुल पाँच तहसीलों क्रमषः देवरिया, रूद्रपुर, बरहज, सलेमपुर एवं भाटपाररानी में विभक्त है। इन तहसीलों के अन्तर्गत कुल 16 विकास खण्ड हैं। इस के अतिरिक्त 176 न्याय पंचायतें, 1190 ग्राम पंचायतें तथा कुल ग्रामों की संख्या 2161 है जिस में गैर आबाद 142 तथा आबाद ग्रामों की संख्या 2019 है।

धरातलीय स्वरूप एवं भूमि उपयोग प्रतिरूप– सम्पूर्ण धरातल समतल मैदानी भाग है। धरातलीय दृश्टिकोण से इसे दो भागों में बांटा जा सकता है। प्रथम भाग रेलवे लाइन (गोरखपुर–सिवान) के उत्तर स्थित है जब कि दूसरा भाग रेलवे लाईन के दक्षिण में स्थित है राप्ती, घाघरा, गोर्रा व छोटी गण्डक की उपस्थिति के कारण अधिकांष क्षेत्र बाढ़ से प्रभावित रहता है। जिले में विभिन्न प्रकार की मिट्टियाँ जायी जाती हैं जिस में दोमट, मटियार एवं बलुई मुख्य हैं। जिले की सर्वाधिक उत्पादक क्षेत्र उत्तर–पूर्व में अवस्थित है। यह जनपद स्थलाकृतिक दृश्टि से तीन भागों में विभाजित है। जनपद के सभी तहसील क्षेत्रों का अधिकांष भाग बांगर है जिस में गेहूँ, गन्ना तथा चावल की अच्छी पैदावार होती है। सलेमपुर, बरहज व रूद्रपुर तहसील में सिंचाई की पर्याप्त सुविधा न होने से मोटे अनाज तथा ज्वार, बाजरा, मक्का, अरहर आदि का अधिक उत्पादन होता है। राप्ती गोर्रा एवं घाघरा नदियों से निर्मित जिले के दक्षिणी पष्चिमी भाग जिस में मुख्यतः रूद्रपुर तहसील का क्षेत्र है कछार है। इस कछारी क्षेत्र में पैदावार की अनिष्चितता बनी रहती है। मुख्य रूप से क्षेत्र में गेहूँ, अरहर, जौ तथा कहीं–कहीं

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-11, No.-II, Issues-14 YEAR- Dec. -2019

चावल का भी उत्पादन होता है।

वर्तमान में नहरों की पर्याप्त सुविधा के कारण सभी फसलों की अच्छी पैदावार होती है। रेलवे लाइन के दक्षिण भाग में स्थित रूद्रपुर तहसील का सम्पूर्ण भाग, सलेमपुर तहसील का अधिकांष भाग और देवरिया तहसील के दक्षिणी भाग में सिंचाई की सुविधा का अभाव है जहाँ नहरें नहीं हैं। उपजाऊ जमीन होते हुए भी प्रचुर उत्पादन नहीं हो पाता है। इस प्रकार इस क्षेत्र को कभी सूखे की मार झेलता पड़ता है तो कभी–कभी बाढ़ की विभीशिका का भी सामना करना पड़ता है। खनिज पदार्थ का पूर्णतया अभाव है सिर्फ नदियों में बालू पर्याप्त मात्रा में पाई जाती है जिस का उपयोग निर्माण कार्यो में किया जाता है। जलवायु समषीतोश्ण प्रकार की है। वनों का कुल विस्तार मात्र 0.01 प्रतिषत भूभाग पर है जो नगण्य है। बागवानी के अन्तर्गत गाँव के बाहरी भागों में आम, जामुन, षीषम, अमरूद आदि के वृक्ष छोटे–छोटे बागों के रूप में पाये जाते है। लगभग 2528 वर्ग किलो मीटर क्षेत्र में बसे देवरिया जनपद की अर्थव्यवस्था मुख्यतः कृशि से निर्धारित होती है। कुल 319926 हेक्टेयर भूमि पर कृशि की जाती है जिस में 121304 हेक्टैयर भूमि पर द्विषस्यी फसल पैदा की जाती है। रबी की खेती 152769 हेक्टेयर खरीफ की खेती 161955 हेक्टेयर तथा जायद की खेती 4804 हेक्टेयर भूमि में की जाती है।

षोध का उद्देष्य– प्रस्तुत षोध पत्र का उद्देष्य क्षेत्र में षस्य गहनता में क्षेत्रीय विभिन्नता का अध्ययन करना है और इस के क्षेत्रीय विभिन्नता को समझने हेतु अवस्थापनात्मक तत्वों में क्षेत्रीय विभिन्नता का स्वरूप एवं प्रभाव का भी अध्ययन करना है।

षोध परिकल्पना एवं विधितंत्र– कृशि अवस्थापनात्मक तत्व तथा विकास स्तर एवं षस्यगत गहनता में उच्च सहसम्बंध पाया जाता हे। उक्त परिकल्पना के परीक्षण हेतु अध्ययन क्षेत्र के द्वितीयक एवं प्राथमिक आंकड़ों का प्रयोग किया गया है। कृशि अवस्थापनात्मक तत्वों में सिंचाई की सुविधा, आधुनिक बीज का उपयोग, पूँजी की उपलब्धता, विपणन की सुविधा की उपलब्धता आदि के सभी के सम्मिलित सूचकांकों के आधार पर जनपद के विभिन्न विकास खण्डों में कृशि अवस्थापना विकास स्तर का निर्धारण किया गया है तथा इस का तुलनात्मक अध्ययन विभिन्न विकास खण्डों में षस्यगत गहनता प्रतिरूप से किया गया है।

कृशि अवस्थापनात्मक तत्व– किसी देष, प्रदेष या क्षेत्र की अर्थव्यवस्था के विकास हेतु अनिवार्य एवं आधारभूत पदार्थ एवं परिस्थितियाँ तथा व्यवस्थाएँ अवस्थापनात्मक तत्व कहलाती है। अवस्थापनात्मक तत्वों के अन्तर्गत किसी देष, समुदाय या संगठन के उन्नत एवं निधिकरण हेतु आधारभूत सुविधाएँ, साधन, सेवाएँ, व्यवस्थाएँ, सरकारी तथा प्रषासन तंत्र को सम्मिलित किया जाता है। वास्तव में अवस्थापनात्मक तत्व एक समूहबोधक षब्द है। ग्रीनवाल्ड डी० ने अवस्थापनात्मक तत्वों का राश्ट्रीय अर्थव्यवस्था के परिप्रेक्ष में विष्लेशण करते हुए इन्हें राश्ट्रीय अर्थव्यवस्था की नीव कहा है जिस पर आर्थिक क्रिया–कलाप यथा–कृशि, उद्योग, व्यापार आदि की स्थिति उत्पादन एवं उत्पादित पदार्थ का संचरण आदि निर्भर करता है। इस तरह स्पश्ट है कि अवस्थापनात्मक तत्व विकास के आधारभूत कारक हैं जिनके बिना विकास अभिप्रेरक अन्य तत्वों के रहते हुए भी विकास प्रक्रिया सम्भव नहीं है। अवस्थापनात्मक तत्व विविधा संसाधनों की खोज, विकास एवं उपयोग हेतु आवष्यक दषाएँ उपलब्ध करा कर ग्रामीण विकास की प्रक्रिया को गति प्रदान करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

षस्य गहनता को सर्वाधिक प्रभावित करने वाले अवस्थापनात्मक तत्वों में सब से प्रमुख कारक सिंचाई सुविधा की उपलब्धता, आधुनिक बीज का उपयोग एवं बीज केन्द्रों की उपलब्धता, उर्वरक की उपलब्धता, विपणन सुविधा की उपलब्धता, पूँजी की उपलब्धता आदि प्रमुख है। प्रस्तुत षोध पत्र में निम्नलिखित अवस्थापनात्मक तत्वों का अध्ययन किया गया है–

1. सिंचाई की सुविधा की उपलब्धता (प्रति हेक्टेयर पर)
2. बीज विपणन केन्द्रों की संख्या (प्रति लाख जनसंख्या पर)
3. कृशि सहकारी ऋण समितियों की संख्या (प्रति लाख जनसंख्या पर)
4. उर्वरक विक्रय केन्द्रों की संख्या (प्रति लाख जनसंख्या पर)

सिंचाई सुविधा की उपलब्धता– किसी भी क्षेत्र में षस्य गहनता को सर्वाधिक प्रभावित करने वाले कारकों में सिंचाई सुविधा की उपलब्धता सर्वाधिक महत्वपूर्ण है। अध्ययन क्षेत्र में षुद्ध बोया गया क्षेत्रफल लगभग 320 हजार हेक्टेयर है जिस का 77.85 प्रतिषत क्षेत्र सिंचित है जो राज्य के औसत 76.3 प्रतिषत से अधिक है। देवरिया जनपद का सर्वाधिक सिंचित विकास खण्ड पथरदेवा (96.99 प्रतिषत) है जब कि सबसे कम सिंचित विकास खण्ड भलुअनी है जहाँ 57.62 प्रतिषत क्षेत्र सिंचित है। अध्ययन क्षेत्र में सिंचाई के प्रमुख साधन नहरें एवं नलकूप हैं जिनके द्वारा सम्पूर्ण सिंचित क्षेत्र का 77 प्रतिषत भू–भाग सिंचित है। उसके बाद कुओं का स्थान है जो कुल सिंचित भू–भाग का 14 प्रतिषत

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-11, No.-II, Issues-14 YEAR- Dec. -2019

है।

जनपद में सिंचाई की मुख्य निर्भरता भूमिग जल पर है क्योंकि कुल सिंचित क्षेत्र का 87 प्रतिष भूमिगत जल स्रोतों द्वारा सिंचित है। कुल सिंचित क्षेत्र व 3.5 प्रतिषत राजकीय नलकूप द्वारा तथा 83.5 प्रतिष निजी नलकूपों द्वारा सिंचित है। अधिकांष क्षेत्र सिंचाई व दृश्टि से काफी सम्पन्न है। सम्प्रति नहरों की कुल लम्बा 3330 किमी० है। 2193 राजकीय नलकूप 8861 निज नलकूप, 9642 पक्के कुएँ एवं 251667 बोरिंग पर ल पम्पसेट है। निजी नलकूप की दृश्टि से यह जनपद काप महत्वपूर्ण है। सबसे अधिक नलकूप देवरिया सदर, गौ बाजार, सलेमपुर लार एवं बैतालपुर विकास खण्ड में मिल हैं। तालाब द्वारा 615 हेक्टेयर कृशि भूमि की सिंचाई व जाती है।

सिंचाई सूचकांक एवं स्तर– सर्वाधिक षुद्ध सिंचित क्षेत्रफल पथरदेवा विकास खण्ड का 96.99 प्रतिषत है जिस का सूचकांक 111.9 है। सब से कम सिंचित क्षेत्रफल भलुअनी विकास खण्ड का 57.62 प्रतिषत है जिस का सूचकांक सबसे कम 66.4 है। सिंचित क्षेत्रफल के आधर पर सूचकांकों की गणना कर वर्ग स्तर का विभाजन किया गया है। अति उच्च वर्ग में वे विकास खण्ड सम्मिलित किए गये हैं जिनका सूचकांक 95 से अधिक है। ऐसे विकास खण्डों में पथरदेवा, रामपुर कारखाना सलेमपुर एवं भागलपुर है। उच्च वर्ग में दो विकास खण्ड देवरिया सदर एवं बैतालपुर है जिसका सूचकांक 90 से 95 के मध्य है। तीसरा वर्ग मध्यम वर्ग है जिसमें 85 से 90 के मध्य सूचकांक वाले विकास खण्ड देसई देवरिया गौरी बाजार एवं लार सम्मिलित है। 80 से 85 सूचकांक निम्न वर्ग का है जिस में तीन विकास खण्ड तथा 80 से कम सूचकांक वाले विकास खण्ड भलुअनी, बनकटा रूद्रपुर एवं बरहज अति निम्न स्तर के हैं।

तालिका–1

देवरिया जनपद : विकास खण्डों के सिंचाई सूचकांक एवं स्तर

क्रम संख्या	विकास खण्ड	शुद्ध सिंचित क्षेत्रफल (प्रति शत में)	सूचकांक	स्तर
1.	गौरी बाजार	74.66	86.1	मध्यम
2.	बैतालपुर	78.76	90.8	उच्च
3.	देसई देवरिया	77.58	89.5	मध्यम
4.	पथरदेवा	96.99	111.9	अतिउच्च
5.	रामपुर कारखाना	94.49	109.0	अतिउच्च
6.	देवरिया सदर	82.05	94.6	उच्च
7.	रूद्रपुर	69.04	79.6	अतिनिम्न
8.	भलुअनी	57.62	66.4	अतिनिम्न
9.	बरहज	66.86	77.1	अतिनिम्न
10.	भटनी	73.37	84.6	निम्न
11.	भाटपाररानी	70.88	81.7	निम्न
12.	बनकटा	68.92	79.5	अतिनिम्न
13.	सलेमपुर	85.20	98.3	अतिउच्च
14.	भागलपुर	94.06	108.5	अतिउच्च
15.	लार	76.00	87.7	मध्यम
16.	तरकुलवा	72.03	83.1	निम्न
	देवरिया जनपद	86.66	100	

बाज विक्रय कन्द्रा का सूचकाक एव स्तर– अध्ययन क्षेत्र में उपलब्ध बीज विक्रय केन्द्रों की गणना प्रति लाख जनसंख्या पर विकास खण्ड स्तर पर की गई है। तद्नुसार सूचकांकों का निर्धारण किया गया है। सूचकांकों के आधार पर जनपद के विकास खण्डों का वर्गीकरण क्रमषः अतिउच्च, उच्च, मध्यम एवं निम्न स्तर वर्ग में किया गया है। प्रथम स्तर के सूचकांक के अन्तर्गत पथरदेवा, रामपुर कारखाना एवं गौरी बाजार विकास खण्ड आते हैं जिनका सूचकांक 110 से अधिक है। दूसरे वर्ग में सलेमपुर, बरहज, रूद्रपुर विकास खण्ड आता है जिस का सूचकांक 100 से 110 के मध्य है। तीसरे वर्ग में 90 से 100 सूचकांक के मध्य चार विकास खण्ड क्रमषः बैतालपुर, देवरिया सदर, लार एवं भाटपाररानी है। 90 से कम सूचकांक वाले विकास खण्ड निम्न वर्ग की श्रेणी में आते हैं। जिनके देसई देवरिया, भलुअनी, भटनी, बनकटा, भागलपुर लार एवं तरकुलवा विकास खण्ड सम्मिलित है।

तालिका–2

देवरिया जनपद : विकास खण्डों के बीज विक्रय केन्द्रों का सूचकांक एवं स्तर

क्रम संख्या	विकास खण्ड	बीज विक्रय केन्द्र (प्रति लाख जनसंख्या पर)	सूचकांक	स्तर
1.	गौरी बाजार	7.5	113.6	अतिउच्च
2.	बैतालपुर	6.2	93.9	मध्यम
3.	देसई देवरिया	5.8	87.9	निम्न
4.	रामपुर कारखाना	9.7	146.9	अतिउच्च
5.	रामपुर कारखाना	8.9	134.8	अतिउच्च
6.	देवरिया सदर	6.3	95.5	मध्यम
7.	रूद्रपुर	6.8	103.0	उच्च
8.	भलुअनी	5.9	89.4	निम्न
9.	बरहज	7.2	109.1	उच्च
10.	भटनी	5.8	87.9	निम्न
11.	भाटपाररानी	6.2	93.9	मध्यम
12.	बनकटा	5.2	78.8	निम्न
13.	सलेमपुर	6.9	104.5	उच्च
14.	भागलपुर	6.7	101.5	निम्न
15.	लार	6.1	92.4	मध्यम
16.	तरकुलवा	5.9	89.4	निम्न
	देवरिया जनपद	6.6	100	

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-11, No.-II, Issues-14 YEAR- Dec. -2019

उर्वरक केन्द्र सूचकांक एवं स्तर– उर्वरक केन्द्र की गणना प्रतिलाख जनसंख्या के आधार पर सूचकांक ज्ञात कर विकास खण्डों का स्तर निर्धारित किया गया है। अति उच्च वर्ग में सम्मिलित विकास खण्डों का सूचकांक 140 से अधिक है। जिसमें पथरदेवा एवं रामपुर कारखाना विकास खण्ड आते है। दूसरा उच्च वर्ग स्तर का है जिसका सूचकांक 120 से 140 के मध्य है इस के अन्तर्गत देवरिया सदर एवं सलेमपुर विकास खण्ड सम्मिलित है। मध्यम वर्ग का सूचकांक 100 से 120 के बीच है इसके अन्तर्गत सात विकास खण्ड क्रमषः बैतालपुर, रूद्रपुर, बरहज, भटनी, भाटपाररानी बनकटा तरकुलवा एवं गौरी बाजार है। अंतिम वर्ग निम्न स्तर का है जिस का सूचकांक 100 से कम है। इसमें पाँच विकास खण्ड देसई देवरिया, भलुअनी, भागलपुर, बनकटा एवं लार सम्मिलित है।

तालिका–3

देवरिया जनपदः विकास खण्डों के उर्वरक केन्द्रों का सूचकांक एवं स्तर

क्रम संख्या	विकास खण्ड	उर्वरक केन्द्रो की संख्या (प्रति लाख जनसंख्या पर)	सूचकांक	स्तर
1.	गौरी बाजार	6.3	108.6	मध्यम
2.	बैतालपुर	6.7	115.5	मध्यम
3.	देसई देवरिया	5.2	89.7	निम्न
4.	पथरदेवा	9.8	169.0	अतिउच्च
5.	रामपुर कारखाना	8.6	148.3	अतिउच्च
6.	देवरिया सदर	7.2	124.1	उच्च
7.	रूद्रपुर	6.5	112.1	मध्यम
8.	भलुअनी	5.1	87.9	निम्न
9.	बरहज	6.6	113.8	मध्यम
10.	भटनी	5.9	101.7	मध्यम
11.	भाटपाररानी	6.8	117.2	मध्यम
12.	बनकटा	5.3	91.4	निम्न
13.	सलेमपुर	7.2	124.1	उच्च
14.	भागलपुर	5.5	94.8	निम्न
15.	लार	5.7	98.3	निम्न
16.	तरकूलवा	6.1	105.2	मध्यम
	देवरिया जनपद	5.8	100	

सहकारी ऋण समिति सूचकांक एवं स्तर– जनपद के सहकारी ऋण समितियों की पहुँच कितने कृशकों तक है इसको ज्ञात करने के लिए विकास खण्ड के अनुसार जनसंख्या एवं सहकारी समितियों की संख्या से अनुपात ज्ञात कर किया गया है। इस में प्रतिलाख जनसंख्या पर सहकारी ऋण समितियों की उपलब्धता ज्ञात कर सूचकांक निकाला गया है। इन सूचकांकों के आधार पर विकास खण्डों का स्तर निर्धारित किया गया है। प्रथम स्तर के पाँच विकास खण्ड क्रमषः पथरदेवा, रामपुर कारखाना, रूद्रपुर, भाटपार रानी एवं सलेमपुर है जिनका सूचकांक 120 से अधिक है। दूसरे उच्च वर्ग में 110 से 120 सूचकांक वाले विकास खण्ड हैं जिसम गौरी बाजार,

तालिका–4

देवरिया जनपद : विकास खण्डों के सहकारी ऋण समिति सूचकांक एवं स्तर

क्रम संख्या	विकास खण्ड	सहकारी ऋण समिति (प्रति लाख जनसंख्या पर)	सूचकांक	स्तर
1.	गौरी बाजार	6.2	114.8	उच्च
2.	बैतालपुर	6.1	112.9	उच्च
3.	देसई देवरिया	5.3	98.1	निम्न
4.	पथरदेवा	7.1	131.5	अतिउच्च
5.	रामपुर कारखाना	6.9	127.8	अतिउच्च
6.	देवरिया सदर	5.5	101.8	मध्यम
7.	रूद्रपुर	7.0	129.6	अतिउच्च
8.	भलुअनी	5.9	109.3	मध्यम
9.	बरहज	5.3	98.1	निम्न
10.	भटनी	6.2	114.8	उच्च
11.	भाटपाररानी	6.7	124.1	अतिउच्च
12.	बनकटा	5.1	94.4	निम्न
13.	सलेमपुर	6.7	124.1	अतिउच्च
14.	भागलपुर	5.0	92.6	निम्न
15.	लार	5.3	98.1	निम्न
16.	तरकुलवा	5.5	101.8	निम्न
	देवरिया जनपद	5.4	100.0	

बैतालपुर एवं भटनी आते हैं। तीसरा वर्ग मध्यम स्तर का है जिस में तीन विकास खण्ड देवरिया सदर तरकुलवा एवं भलुअनी सम्मिलित है जिनका सूचकांक 100 से 110 के मध्य है। अंतिम वर्ग 100 से कम सूचकांक का वर्ग है जिसके अन्तर्गत क्रमषः बरहज, बनकटा, भागलपुर, देसई देवरिया एवं लार विकास खण्ड आते हैं।

संयुक्त अवस्थापनात्मक सूचकांक एवं कोटि– समस्त विकास खण्डों के अवस्थापनात्मक तत्वों के सूचकांकों

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-11, No.-II, Issues-14 YEAR- Dec. -2019

को जोड़ते हुए सम्मिलित रूप से संयुक्त सूचकांक ज्ञात किया गया है। संयुक्त सूचकांक के आधार पर ही विकास खण्डों को कोटि क्रम दिया गया है। जिसमें संयुक्त स्थापना सूचकांक का योग सर्वाधिक पथरदेवा विकास खण्ड का है जो 559.3 है। इस प्रकार पथरदेवा विकास खण्ड प्रथम स्थान पर है। पथरदेवा विकास खण्ड में अवस्थापनात्मक सुविधाओं का अध्ययन क्षेत्र में सर्वाधिक विकास हुआ है। पथरदेवा विकास खण्ड के अतिरिक्त अन्य विकास खण्डों को क्रमषः (रामपुर कारखाना, सलेमपुर, रूद्रपुर, गौरी बाजार, भाटपाररानी, देवरिया सदर, बैतालपुर, बरहज, भटनी, भागलपुर, लार देसई देवरिया, भलुअनी एवं बनकटा) कोटियाँ प्रदान की गयी है। बनकटा विकास खण्ड में अवस्थापनात्मक सुविधाओं का सब से कम विकास होने के कारण उसे अंतिम कोटि प्राप्त हुआ है।

तालिका–5

संयुक्त अवस्थापना सूचकांक एवं कोटि

क्रम संख्या	विकास खण्ड	सिंचाई	बीज विक्रय केन्द्र	उर्वरक विक्रय केन्द्र	सहकारी ऋण समिति	संयुक्त	कोटि
1.	गौरी बाजार	86.1	113.6	108.6	114.8	423.1	5
2.	बैतालपुर	90.8	93.9	115.5	112.9	413.1	8
3.	देसई देवरिया	80.5	84.4	80.7	98.1	361.7	14
4	पथरदेवा	111.9	146.9	169.0	131.5	559.3	1
5.	रामपुर कारखाना	109.0	134.8	148.3	127.8	519.9	2
6.	देवरिया सदर	94.6	95.5	124.1	101.8	416.0	7
7.	रूद्रपुर	79.6	103.0	112.1	129.6	424.3	4
8.	भलुअनी	66.4	89.4	87.9	109.3	353.0	15
9.	बरहज	77.1	109.1	113.8	98.1	398.1	9
10.	भटनी	84.6	87.9	101.7	114.8	389.0	10
11.	भाटपाररानी	81.4	93.9	117.2	124.1	416.9	6
12.	बनकटा	79.5	78.8	91.4	94.4	344.1	16
13.	सलेमपुर	96.3	104.5	124.1	124.1	451.0	3
14.	भागलपुर	108.5	86.4	94.8	92.6	382.3	11
15.	लार	87.7	92.4	98.3	98.1	376.5	13
16.	तरकुलवा	83.1	89.4	105.2	101.8	379.5	12

षस्यक्रम गहनता– षस्यक्रम गहनता से आषय सामान्यतया किसी क्षेत्र विषेश के उस कृशित क्षेत्र से है जिस पर वर्श के भीतर एक से अधिक कितनी षस्यों का उत्पादन किया जाता है। षुद्ध कृशिगत भूमि में द्विषस्यीय एवं बहुषस्यीय क्षेत्र के योग को कुल षस्यान्तर्गत क्षेत्र कहते हैं। किसी भी क्षेत्र में षुद्ध कृशित क्षेत्र की तुलना में कुल षस्यान्तर्गत क्षेत्र का अधिक होना षस्यक्रम गहनता की मात्रा को प्रदर्षित करता है। षस्य गहनता वह सामयिक बिन्दु है जहाँ भूमि, श्रम, पूँजी, विनियोग तथा प्रबंधन तंत्र का सम्मिश्रण सर्वाधिक लाभप्रद सिद्ध होता है। इस प्रकार षस्य गहनता की संकल्पना का प्रादुर्भाव एक ही खेत में वर्श विषेश में एक से अधिक बार बोई गयी फसलों की उत्पादन मात्रा से होती है। भारत में विभिन्न विद्वानों ने अपने क्षेत्रीय अध्ययन में षस्य गहनता ज्ञात करने के लिए सामान्य सूत्र का प्रयोग किया है अथवा गणना को संषोधित करके षस्य गहनता ज्ञात करने का प्रयास किया है। वास्तव में षस्य गहनता सिंचाई के साधन, उन्नतिषील षस्य प्रजातियों, उर्वरकों एवं कृशि यंत्रों की उपलब्धता पर निर्भर करती है।

षस्य गहनता स्तर– अध्ययन क्षेत्र की औसत षस्य गहनता 155.72 प्रतिषत है जो राज्य की औसत षस्य गहनता 151.36 प्रतिषत से अधिक है जो कृशि अवस्थापनात्मक सुविधाओं के समुचित विकास को प्रतिबिम्बित करता है। अध्ययन क्षेत्र में षस्य गहनता स्तर देखने पर क्षेत्रीय विभिन्नता दिखाई पड़ती है। उत्तरी क्षेत्र में षस्य गहनता अधिक है जब कि दक्षिणी पष्चिमी एवं उत्तरी पूर्वी भाग में षस्य गहनता कम होती जाती है। अपवाद केवल भागलपुर विकास खण्ड में है जहाँ की षस्य गहनता स्तर अपने निकटवर्ती क्षेत्रों में सर्वाधिक (181.71 प्रतिषत) है। जनपद में औसत षस्यक्रम गहनता 155.72 प्रतिषत से अधिक वाले विकास खण्ड क्रमषः गौरी बाजार, बैतालपुर, देसई देवरिया, पथरदेवा, देवरिया सदर, भलुअनी एवं भागलपुर है। रामपुर कारखाना, रूद्रपुर, बरहज, भटनी, भाटपाररानी, बनकटा, सलेमपुर लार एवं तरकुलवा ऐसे विकास खण्ड हैं। जिनकी षस्य गहनता औसत से नीचे है।

षस्य गहनता को सूचकांकों के आधार पर विष्लेशण करें तो प्रथम वर्ग अतिउच्च में देसई देवरिया, पथरदेवा, देवरिया सदर एवं भागलपुर सम्मिलित है जिनका सूचकांक 105 से अधिक है। इनमें तीन विकास खण्ड उत्तरी भाग में तथा भागलपुर विकास खण्ड दक्षिण में स्थित है। दूसरे उच्च वर्श में वे विकास खण्ड हैं जिनका सूचकांक 100 से 105 के मध्य में है ये क्रमषः गौरीबाजार, बैतालपुर एवं भलुअनी विकास खण्ड हैं। अध्ययन क्षेत्र में कुल पाँच विकास खण्ड मध्यम स्तर में आते हैं जिनका सूचकांक 95 से 100 के मध्य है ये सभी

तालिका–6

षस्य क्रम गहनता स्तर एवं कोटि

ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBBIL04292
RNI REG. NO. UPBBIL/2014/66218

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-11, No.-II, Issues-14 YEAR- Dec. -2019

क्रम संख्या	विकास खण्ड	भास्य क्रम गहनता (प्रति त में)	सूचकांक	स्तर	कोटि
1.	गौरी बाजार	161.83	103.9	उच्च	5
2.	बैतालपुर	159.67	102.5	उच्च	6
3.	देसई देवरिया	167.98	107.9	अतिउच्च	3
4.	पथरदेवा	165.70	106.4	अतिउच्च	4
5.	रामपुर कारखाना	123.74	79.5	निम्न	15
6.	देवरिया सदर	168.48	108.2	अतिउच्च	2
7	रूद्रपुर	150.10	96.4	मध्यम	10
8.	भलुअनी	155.79	100.1	उच्च	7
9.	बरहज	144.88	93.0	निम्न	13
10.	भटनी	148.72	95.5	मध्यम	12
11.	भाटपाररानी	149.07	95.7	मध्यम	11
12.	बनकटा	150.51	96.7	मध्यम	9
13.	सलेमपुर	144.62	92.9	निम्न	14
14.	भागलपुर	101.71	110.7	अतिउच्च	1
15.	लार	154.06	98.9	मध्यम	8
16.	तरकुलवा	123.10	79.1	निम्न	16
	देवरिया जनपद	155.72	100.0		

विकास खण्ड दक्षिणी पूर्वी भाग में स्थित हैं। इसके अन्तर्गत रूद्रपुर, भटनी, भाटपाररानी, बनकटा एवं लार आते हैं। तीन विकास खण्ड रामपुर कारखाना, बरहज एवं सलेमपुर निम्न स्तर के अन्तर्गत है जिनका सूचकांक 95 से कम है। उपर्युक्त अध्ययन से ज्ञात होता है कि अवस्थापनात्मक तत्वों में सब से प्रभावी एवं महत्वपूर्ण कारक सिंचाई सुविधा की उपलब्धता है। अवस्थापनात्मक तत्वों के अध्ययन से यह भी ज्ञात होता है कि जिस विकास खण्ड की सिंचाई क्षेत्रफल का प्रतिषत अधिक है वहाँ का संयुक्त अवस्थापनात्मक सूचकांक भी अधिक है और जहाँ की कम है वहाँ का संयुक्त सूचकांक भी कम है। सलेमपुर मात्र एक ऐसा विकास खण्ड है जिस की सिंचाई कम होने के बावजूद संयुक्त सूचकांक अधिक हैं (तालिका–5) क्यों कि अन्य अवस्थापनात्मक तत्वों की उपलब्धता अधिक है। अवस्थापनात्मक तत्वों एवं षस्य गहनता का संयुक्त रूप से विष्लेशण करने पर स्पश्ट तौर पर कहा जा सकता है कि जहाँ का अवस्थापना स्तर अधिक है वहाँ की षस्य गहनता भी अधिक है।

निश्कर्शः– उपर्युक्त अध्ययन एवं विष्लेशण से स्पश्ट है कि अवस्थापनात्मक तत्व और षस्य गहनता में सीधा संम्बन्ध पाया जाता है। सहसंम्बनध गुणांक की गणना अवस्थापना और षस्य गहनता के कोटि हि क्रमों के आधार पर साह किया गया है जो अवस्थापनात्मक तत्वों और षस्य गहनता के बीच उच्च सह सम्बंध को दर्षाता है। उल्लेखनीय है कि सामान्यतः इस क्षेत्र की षस्य गहनता स्तर को प्रदेष एवं राश्ट्र के सन्दर्भ में देखें तो प्रदेष एवं राश्ट्रीय औसत से बहुत अधिक है जिस का कारण यह है कि सिंचाई सुविधाओं की दृश्टिकोण से यह क्षेत्र लगभग संतृप्त है। यद्यपि सरकारी आंकड़ो में 86.66 प्रतिषत षुद्ध कृशित क्षेत्र सिंचित है। परन्तु व्यक्तिगत सर्वेक्षण से वह तथ्य उभर कर सामने आया है कि प्रत्येक कृशक अपने फसलों की सिंचाई अवष्य करता है। व्यक्तिगत पम्पसेटों की सघनता पायी जाती है। इस क्षेत्र में कृशि विकास में सर्वाधिक अवरोधक कारको को यदि बरीयता क्रम दिया जाए तो प्रथम स्थान पर परिवहन साधन विषेशकर सड़क परिवहन साधनों की सम्यक उपलब्धता का अभाव है। उस के प्ष्चात विद्युत सुविधा का अभाव एवं कृशि उत्पादकों के विपणन का अभाव प्रमुख है। कुछ क्षेत्रो मे प्रतिवर्श जलप्लावन की समस्या विद्यमान रहती है जहाँ सिर्फ रबी की ही फसल सम्भव हो पाती है। सड़क परिवहन, विद्युत , विपणन एवं बीज, सहकारिता एवं जल प्लावन की समस्या को दूर करके यहाँ की कृशि को और अधिक लाभदायक बनाया जा सकता है। कृशि अवस्थापनात्मक सुविधाओं को और अधिक विकसित करने की ओर ध्यान देने की आवष्यकता है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. द्विवेदी ए०के० (2006) अवस्थापनात्मक तत्व एवं प्रादेषिक ग्रामीण विकास एक संकल्पनात्मक अध्ययन, उत्तर भारत, भूगोल पत्रिका, गोरखपुर
2. पाण्डेय जे० एन० एवं कमलेष एस० आर० (2001) कृशि भूगोल
3. सिंह जगदीष एवं सिंह बंषराज (1981) कृशि गहनता एवं विविधता तथा ग्रामीण विकास, गोरखपुर तहसील का प्रतीकात्मक अध्ययन उ०भा०भू० पत्रिका अंक–17 पृश्ठ–1–11
4. सांख्यिकीय पत्रिका, जनपद देवरिया 2016, विकास भवन, देवरिया
5. कुमार, अरविन्द (2003) ग्रामिण अर्थतंत्र के विकास में कृशि विकास की भूमिका गोरखपुर मण्डल का प्रतीक अध्ययन, अप्रकाषित षोध प्रबंध।

*****

PIF/4.005 ***ASVS Reg. No. AZM 561/2013-14***